बाबा ने कहा... 'तुम संतुष्टमणि हो!!'

- ब्र.कु. संतोष,सायन,मुम्बई

सन् 1965 में मुझे बृजेन्द्रा दादी के साथ माउण्ट आबू जाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब पाण्डव भवन पहुँचे तो वहाँ का शान्त और पवित्र वातावरण भाने लगा। दो घण्टे के बाद हम बाबा से मिलने कमरे में गये। पहली मुलाकात में बाबा ने शक्तिशाली दृष्टि दी और कहा, "मीठी बच्ची, पहुँच गई हो न बाबा के पास।" बाबा के मस्तक पर मुझे दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। उनका चेहरा चन्दा-सा चमक रहा था क्योंकि ज्ञान सूर्य स्वयं उनमें प्रविष्ट था। पिता श्री जी से प्रथम मिलन ने मेरे मन को मोह लिया और अमिट छाप लगा दी। ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि बहुत समय से बिछड़ा हुआ बच्चा अपने माँ-बाप से मिल गया हो। इस अलौकिक मिलन से जन्म-जन्मान्तर की थकावट मिट गई तथा निश्चय में और भी दृढ़ता आ गई।

पिताजी की स्वीकृति

उस समय मुझे मधुबन में कुछ अधिक दिन रहने का मौका मिला। हर रोज़ मैं बाबा से मिलती थी। हँसी-हँसी में बाबा मुझे कहते थे, "बच्ची, अभी तुम बड़ी हो गई हो, तुम्हें ईश्वरीय सेवा करनी चाहिए, तुम बहुत सेवा कर सकती हो।" बाबा की स्नेह भरी पालना से मेरा मन मधुबन में लगने लगा। एक दिन मैंने कहा, "बाबा, मैं मधुबन में ही रह कर सेवा करूंगी, घर नहीं जाऊंगी।" बाबा ने कहा, "बच्ची, यहाँ रहने के लिए तुम्हारे पिताजी का स्वीकृति-पत्र चाहिए।" तुरन्त मैंने पिताजी को पत्र लिखा कि मैं अपने जीवन को ईश्वरीय सेवा में लगाना चाहती हूँ, मुझे यह जीवन बेहद पसन्द है, स्वीकृति-पत्र जल्दी भेजिए। जिस दिन हमें वापस आना था उसी दिन पिता जी का स्वीकृति-पत्र मिला। मैं दौड़ती हुई बाबा के पास गई और कहा, "बाबा, मुझे पिताजी ने स्वीकृति दे दी है, अब मैं यहाँ ही रहूंगी।" बाबा ने मुस्कराते हुए कहा, "बच्ची, अभी तुम छोटी हो, तुम्हें घर वापस नहीं जाना है तो बृजेन्द्रा दादी के साथ सायन सेवाकेन्द्र पर सेवार्थ जाओ।" मैंने कहा, "बाबा, वहाँ तो लौकिक बहनें तथा भाई बार-बार मिलते रहेंगे, मैं सेवा कैसे कर सकूंगी?" फिर

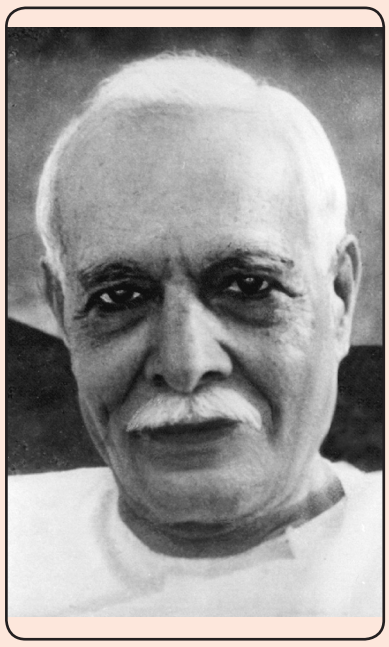

बाबा ने कहा, "बच्ची, पूना जाओ, जनक बच्ची के पास।" मैं वहाँ गई और बहुत अच्छी धारणाएँ सीखी।

सन् 1968 में बाबा मुम्बई आये, मैं पूना से बाबा को मिलने मुम्बई गई। तब बाबा ने मुझे सायन सेवाकेन्द्र पर भेज दिया। उसके बाद बाबा मुझे पत्रों द्वारा प्रेरणा देते थे, "बच्ची, एक जगह नहीं बैठना है, दूसरे सेवाकेन्द्रों पर चक्कर लगाती रहो, बाबा को समाचार बताती रहो। तुम्हें तो चक्रवर्ती बनना है।" सचमुच बाबा की यह प्रेरणा मेरे लिए वरदान ही थी।

जब बाबा अव्यक्त हुए

बाबा के अव्यक्त होने पर मुझे पूर्ण निश्चय था कि बाबा का कार्य चलता आया है, चलता रहेगा। मैं मधुबन में समय प्रति समय सेवार्थ आती थी, तो अव्यक्त बापदादा से मुलाकात होती थी। एक बार बापदादा ने मुझे वरदान दिया, "सदा सन्तुष्टमणि हो, सन्तुष्टता के गुण से सर्व को सन्तुष्ट करती रहती हो। जो स्वयं सन्तुष्ट रहता है उससे सभी सन्तुष्ट रहते हैं इसलिए रजिस्टर बहुत अच्छा है।"

थकना नहीं और रुकना नहीं

बाबा कहते थे, "बच्चे, आप विजयी रत्न हो। विजय का तिलक आपके माथे पर मानो लगा ही हुआ है। बस, आप इतना करना कि घबराना नहीं, थकना नहीं और रुकना नहीं, बल्कि जो मार्ग शिवबाबा अब दिखा रहे हैं, उस पर चलते चलना।" कभी कहते थे, "बच्चे, ये परीक्षाएँ अन्तिम सलाम करने आई हैं।" बस, ईश्वर के प्रेम को बताते हुए बाबा नित्य प्रति सबको खुशी का प्याला पिलाते थे।

पिताश्री का हृदय मानव मात्र के लिए वात्सल्य से लबालब भरा हुआ था। बड़ी-से-बड़ी गलतियों और कमज़ोरियों पर ध्यान न देकर वे हृदय का समस्त प्यार आत्माओं पर उड़ेल देते थे। लौकिक पिता के प्रेम में भी स्वार्थ की गन्ध आती है, लेकिन मानव मात्र के अलौकिक पिता 'प्रजापिता ब्रह्मा' का प्रेम पूर्णत: निस्वार्थ था। जैसे लौकिक पिता अपने पुत्र को जेल से छुड़ाने के लिए बड़े-से-बड़े कष्ट सह लेता है, उसी तरह पिताश्री एक-एक जीवात्मा को माया की कैद से छुड़ाने के लिए अपने आराम की ओर भी ध्यान न देकर निरन्तर सेवारत थे। मानव-मात्र के लिए इतना पितृ-स्नेह था पिताश्री के हृदय में!

नर से नरोत्तम... - पेज 1 का शेष

का कमाल नहीं था, ये कमाल था परमात्मा का, जिनकी प्रेरणा से ये सारे कार्य संभव हो रहे थे। परमात्मा ने ही दादा लेखराज का नाम परिवर्तित करके 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखा। एक साधारण इंसान को पूरे जग को परिवर्तित करने वाला बना दिया। आप देखिये, वो प्रजापिता ब्रह्मा हमेशा ओम मंडली के सभी सदस्यों को यही कहते रहते कि सभी के प्रति शुभचिंतक बनकर सबके कल्याण का चिंतन करें और किसी भी परिस्थिति में किसी के प्रति वैर-भाव ना पनपने दें। आप ब्रह्मा को अविचल, अटल स्थिति में भी देख सकते हैं, क्योंकि कालांतर में जब भारत पाकिस्तान का विभाजन हुआ, उस समय ब्रह्मा बाबा और उनके साथ सभी सहयोगियों को पाकिस्तान छोड़ कर माउण्ट आबू के लिए प्रस्थान करना था। लेकिन वरिष्ठ दादियों, दीदीयों से जब उसके बारे में पूछा गया, तब उन्होंने कहा कि ऐसे समय पर भी हमारे ब्रह्मा बाबा के चेहरे पर ज़रा भी सिकन नहीं थी। इसके अलावा जब स्थानांतरण हुआ, तो भी माउण्ट आबू आने के बाद उनका बहुत धन व्यय हुआ, यहाँ पर भाई बहनों को भोजन तक की मुश्किलों का सामना करना पड़ा, तब भी प्रजापिता ब्रह्मा अचल, अटल, अडोल स्थिति में सदा रहे। कहा जाता है कि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इतनी तपस्या की, कि आज भी जो कोई माउण्ट आबू के पाण्डव भवन परिसर में आता है, तो उनके प्रेम को, उनकी निष्ठा को, उनकी सत्यता को, उनके वायब्रेशन्स को फील करता है। हर एक मनुष्य उनसे निश्छल भाव महसूस करता है। ये एक नहीं, अनेकों का अनुभव है कि ब्रह्मा बाबा कोई अव्यवहारिक या किताबों की शोभा बढ़ाने वाला सिद्धान्त नहीं हैं, लेकिन एक साक्षात प्रमाण हैं इस दुनिया के मनुष्यों के लिए, जो वर्तमान परिवेश में किसी को प्रेम और शांति से जीवन जीते हुए सभी के अंदर वो धारणा भर दी, ताकि कोई ये ना कह सके, कि खुद तो करते नहीं हैं और मुझे कह रहे हैं। इसलिए ब्रह्मा 'ब्रह्मा' है, वो पहले स्वयं करता, स्वयं का जीवन दिव्य बनाता, फिर औरों का बनाता। ऐसी दिव्य विभूति, इस रुहानी सेना के सर्वश्रेष्ठ सेनापति प्रजापिता ब्रह्मा, जो अपने सहयोगियों को योग्य बनाकर 18 जनवरी 1969 को सूक्ष्मलोक निवासी बने, उनके लिए आज हम सभी का सिर श्रद्धा से झुका हुआ है। हमें लगता है, कि उनके द्वारा दिखाये गए मार्ग पर चलने का संकल्प सच में उनके प्रति आस्था और श्रद्धा का अर्पण होगा। हम पूरे विश्व के समस्त मनुष्यों को यही कहना चाहेंगे कि ब्रह्मा बाबा कोई साधारण इंसान नहीं थे, वे मास्टर भगवान थे। अगर कहीं कोई किसी से प्रेरणा लेने योग्य दिव्य विभूति है, तो वो हैं कर्म और उसका प्रत्यक्ष स्वरूप बनने वाले प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। ऐसी दिव्य विभूति को हम सभी की तरफ से शत् शत् नमन।

जम्मू कश्मीर। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जम्मू कश्मीर के उपमुख्यमंत्री निर्मल कुमार सिंह, भाजपा महिला कार्यकर्ता शीला हंडू, ब्र.कु. मृत्युंजय,मा.आबू, ब्र.कु. रविन्दर, ब्र.कु. निर्मल, ब्र.कु. प्रेम बहन,पंजाब तथा ब्र.कु.सुदर्शन बहन।

राजगढ़-म.प्र.। 'विश्व यादगार दिवस' पर सड़क दुर्घटना में जान गवाँने वालों के प्रति दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए खादी ग्रामोद्योग उपाध्यक्ष रघुनंदन शर्मा, पुलिस अधीक्षक सिमाला प्रसाद, यातायात सब इंस्पेक्टर देवेन्द्र दीक्षित, समाजसेवी ओ.पी.शर्मा तथा ब्र.कु. मधु।

शाजापुर-म.प्र.। प्राचीन मंदिर के जिर्णोद्धार अवसर पर निकाली गई भव्य शोभा यात्रा रथ में विराजित कर ब्र.कु. प्रतिभा, ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु.चंदा का किया गया सम्मान।

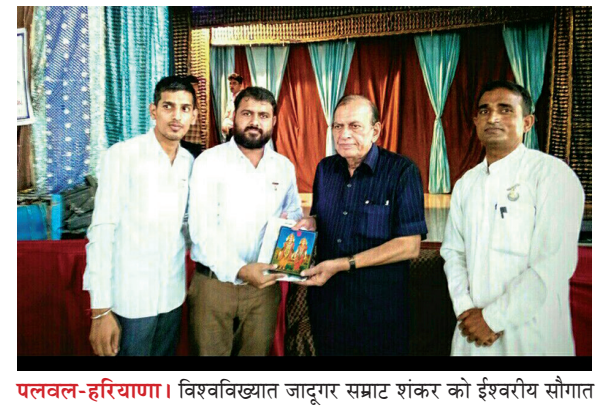

पलवल-हरियाणा। विश्वविख्यात जादूगर सम्राट शंकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुप, ब्र.कु. राजेन्दर तथा ब्र.कु. विक्की।

संगमनेर-महा.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में एस.एस.टी. आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के प्रिन्सीपल विरेन्द्र शाह, रजिस्ट्रार सतीश घुले व अन्य डॉक्टर्स के साथ ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. पदमा तथा डॉ. यागिनी।

मनावर-म.प्र.। शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल में बच्चों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुंदरी। साथ हैं ब्र.कु. नारायण तथा अन्य।